

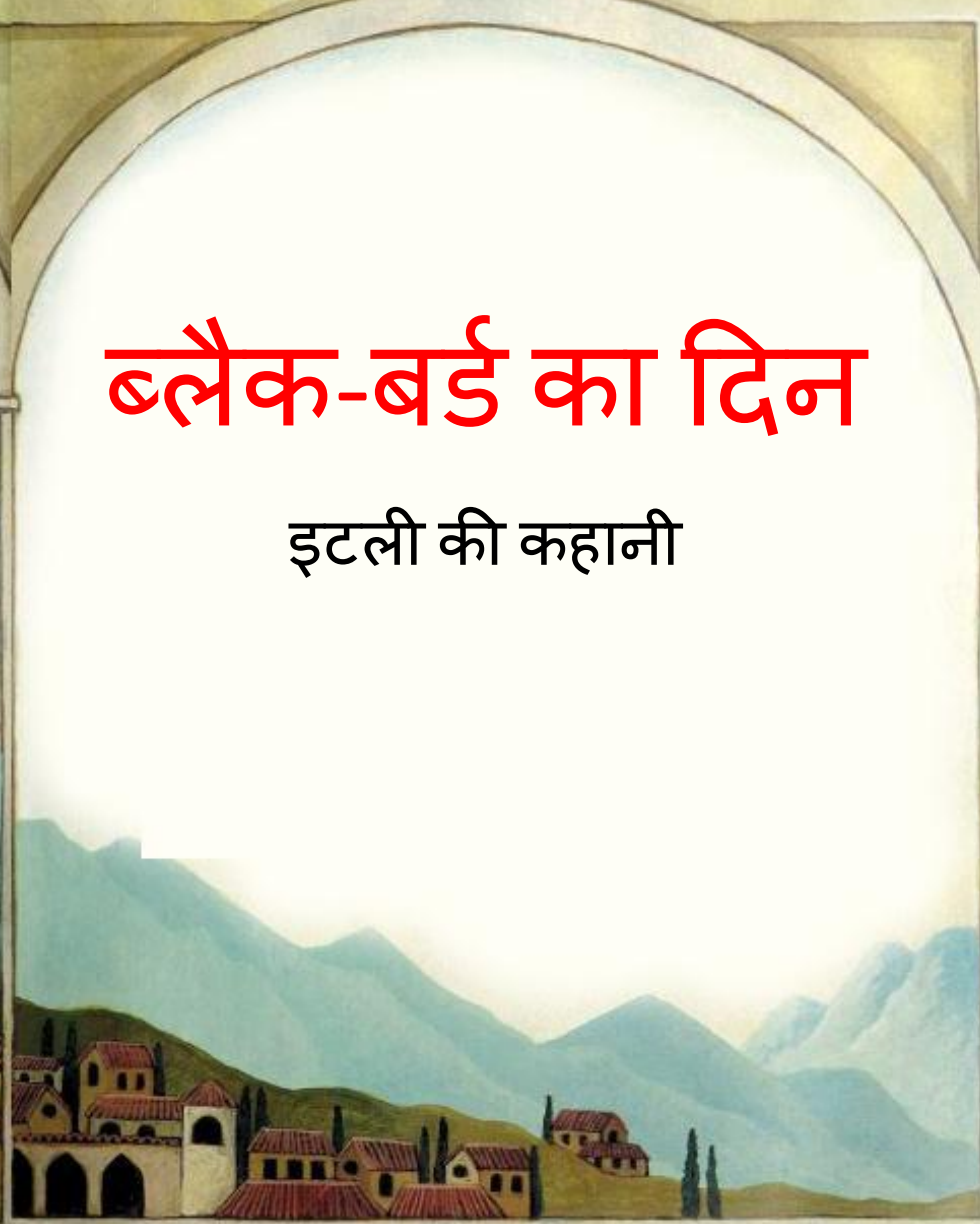
ब्लैक-बर्ड का दिन

इटली की कहानी



ब्लैक-बर्ड का दिन

इटली की कहानी





बहुत साल पहले इटली के उत्तरी पहाड़ों में एक ड्यूक अपनी बेटी जेम्मा के साथ अकेले रहते थे. उनकी पत्नी का देहांत हो चुका था और उन्होंने अपनी बेटी जेम्मा को अकेले ही पालकर बड़ा किया था.

वो जिस आलीशान घर में रहते थे, वो शहर के बीचोबीच था. उनके घर का दरवाजा हमेशा खुला रहता था. जिसे भी मदद की जरूरत होती वो कभी भी उनके घर में आ सकता था. ड्यूक जेनारो एक दयालु इंसान थे. वो बुद्धिमान और निष्पक्ष भी थे.



हर सुबह इयूक जेनारो बड़े हॉल में अपनी विशाल मेज के पीछे बैठते थे. वो वहां बैठकर लोगों की समस्याओं और शिकायतों को सुनते थे.

जब से वो एक छोटी बच्ची थी तब से जेम्मा ने अपने पिता को लोगों के साथ विचार-विमर्श करते देखा था. लोग उनकी सलाह से संतुष्ट और खुश होकर घर लौटते थे.

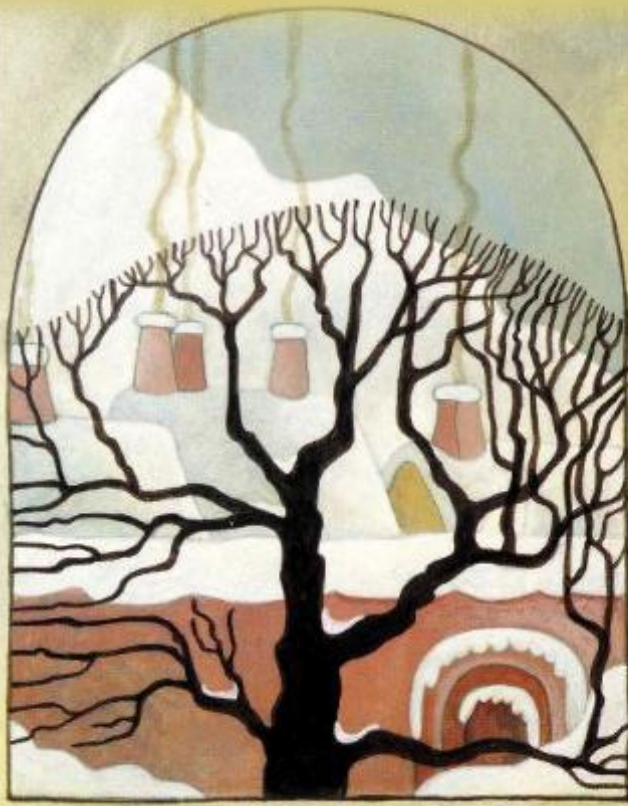


दोपहर में जेम्मा पढ़ाई खत्म करने के बाद पिताजी के पास आंगन में आकर बैठती थी.

"तुमने आज क्या किया, मेरी प्यारी बेटी?" इयूक जेनारो उससे पूछते. जेम्मा अपने पिता को बताती थी कि उसने उस दिन क्या-क्या पढ़ा और अपने टीचर से क्या-क्या नया सीखा.

जब वे बैठकर बातें करते तब पेड़ों में चमकीले रंग के पक्षी अपने गीत गाना शुरू करते. "ज़रा सुनो, उनका संगीत," इयूका जेनारो कहते. "देखो चिड़ियों का संगीत कार्यक्रम शुरू हो गया है." हमेशा एक गीत, दूसरे से बेहतर होता. सबसे सुन्दर और प्यारा गीत एक सफेद चिड़िया गाती थी. जेम्मा ने उसका नाम "ला-कोलम्बा" रखा था. इयूका जेनारो जब आंगन में जेम्मा के साथ बैठते और पक्षियों के गीत सुनते, तब वे सबसे ज़्यादा खुश होते.

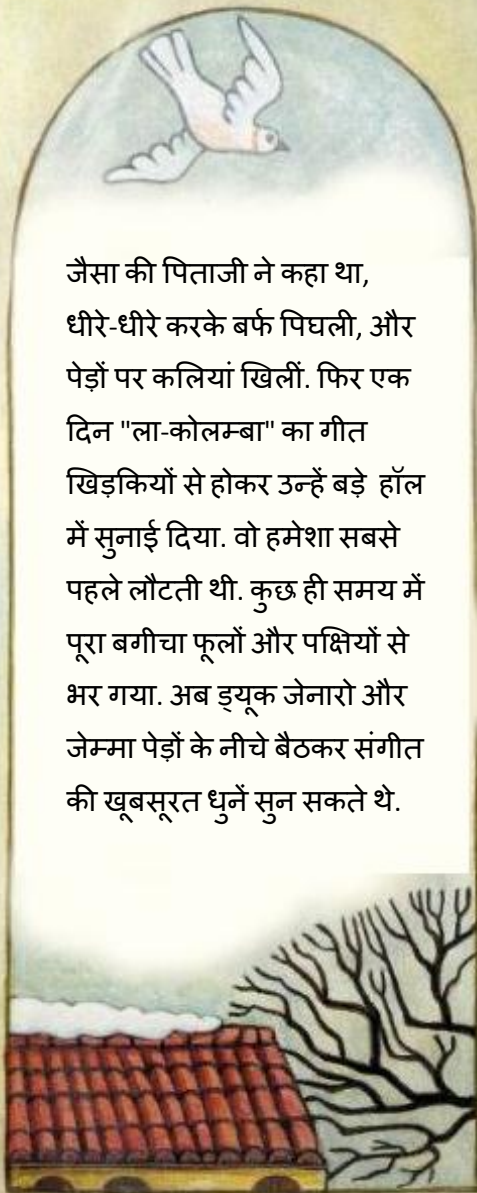




लेकिन उन ऊंचे पहाड़ों में एक साल सर्दी जल्दी आ गई. जैसे ही बर्फ गिरना शुरू हुई, दिन छोटे होने लगे और उसके बाद पक्षी भी गर्म स्थानों के लिए दक्षिण की ओर रवाना होने लगे. ठंड के दिनों में ड्यूक जेनारो और जेम्मा बड़े हॉल की दीवार में बने अलाव की आग के पास दोपहर का समय बिताते थे. सर्दियों में स्नो गिरती रही और तापमान लगातार गिरता रहा. ऐसा लगा जैसे सर्दियां कभी खत्म ही नहीं होंगी.

लेकिन ड्यूक जेनारो हमेशा जेम्मा को समझाते और दिलासा दिलाते कि वसंत जरूर वापस आएगी. "जल्द ही, प्रिय जेम्मा, दिन लंबे होंगे, सूरज तेज़ चमकेगा और फिर "ला-कोलम्बा" वापिस आएगी."
 "तब बाकी पक्षी भी वापस आएंगे और फिर से उनका संगीत कार्यक्रम शुरू होगा," जेम्मा ने पिताजी से कहा.
 "हाँ," उन्होंने जवाब दिया, "मुझे उन पक्षियों की बहुत याद आती है."

जैसा की पिताजी ने कहा था,
धीरे-धीरे करके बर्फ पिघली, और
पेड़ों पर कलियां खिलीं. फिर एक
दिन "ला-कोलम्बा" का गीत
खिड़कियों से होकर उन्हें बड़े हॉल
में सुनाई दिया. वो हमेशा सबसे
पहले लौटती थी. कुछ ही समय में
पूरा बगीचा फूलों और पक्षियों से
भर गया. अब इयूक जेनारो और
जेम्मा पेड़ों के नीचे बैठकर संगीत
की खूबसूरत धुनें सुन सकते थे.





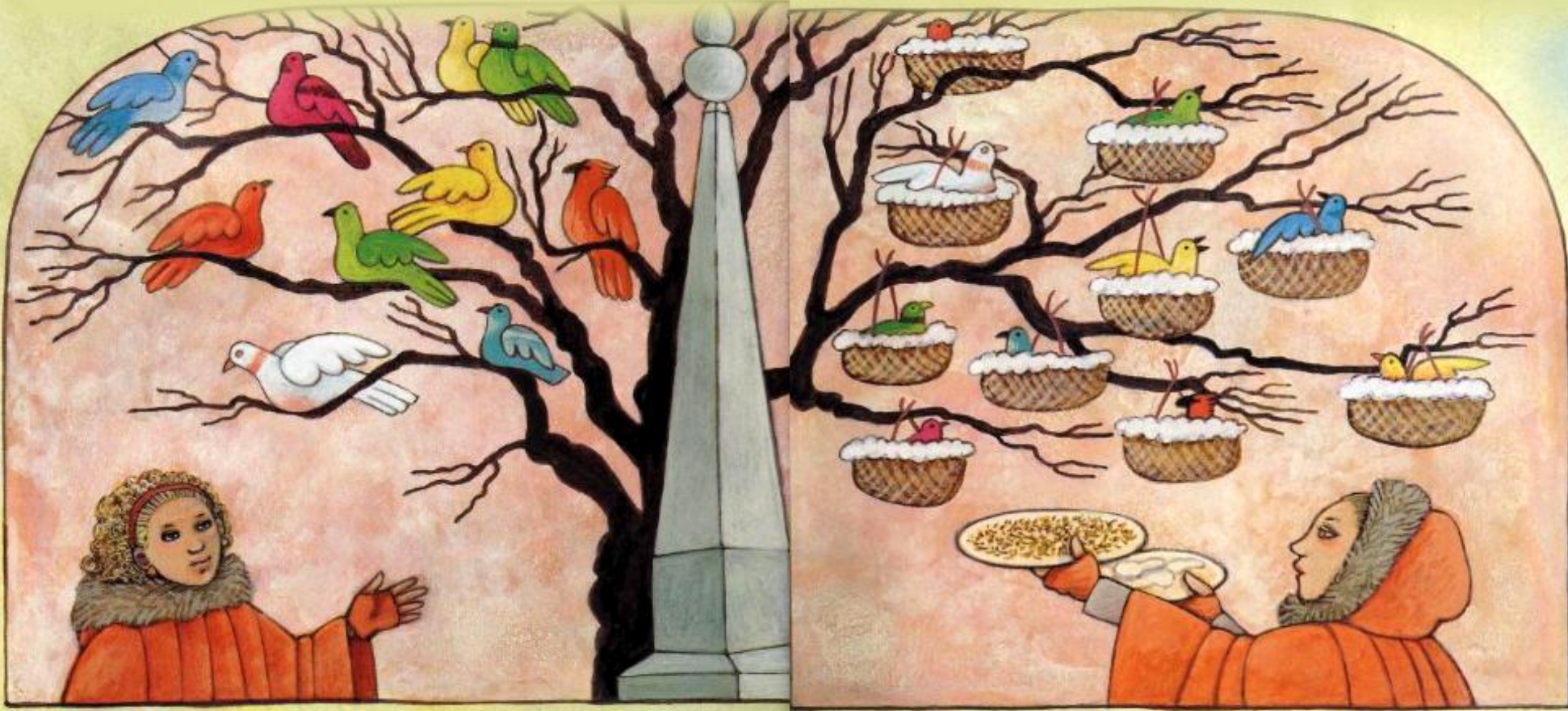
एक साल बाद गर्मी के मौसम के बाद इयूक जेनारो बीमार पड़ गए. डॉक्टरों को बुलाया गया, लेकिन वे भी उनकी कुछ मदद नहीं कर पाए. इयूक अपने बिस्तर में पड़े रहते क्योंकि वो उठने में असमर्थ थे.

"खिड़की खोलो जेम्मा, जिससे मैं चिड़ियों का संगीत सुन सकूँ," इयूक जेनारो ने कहा.

पक्षियों का गीत सुनकर इयूक को बहुत सकून मिलता था. इसलिए हर दोपहर जेम्मा उनके कमरे में जाकर खिड़की खोल देती थी. फिर दोनों मिलकर चिड़ियों के मधुर गीत सुनते थे और फिर इयूक जेनारो सो जाते थे.

धीरे-धीरे दिन छोटे होते गए और हवा ठंडी होती गई. जेम्मा को पता था कि सर्दी अब आने ही वाली थी. अब कभी-कभी सुबह के समय आँगन में स्नो की एक परत दिखाई देती थी. जेम्मा ने कुछ पक्षियों को दक्षिण की ओर पलायन करते हुए भी देखा.





"कृपा कर प्यारे मित्रों आप मेरे पिता की खातिर यहीं रहें और उनके लिए गीत गाएँ. आपका संगीत सुनकर निश्चित रूप से उनकी तबियत बेहतर होगी. क्योंकि आपका संगीत सुनने के बाद ही वो आराम से सो पाते हैं. मैं आपके खाने-पीने का प्रबंध करूंगी. मैं पेड़ों में टोकरियाँ बांधूंगी जिससे आप वहाँ अपने घोंसले बना सकें और वहाँ गर्म रहें. आप कृपा यहीं रहें."

जेम्मा ने प्लेटों को बीजों से भरा जिससे चिड़ियों उन्हें खा सकें. उसने टोकरियों को पेड़ों की शाखाओं से बांधा और उन्हें नरम ऊन से भरा ताकि पक्षी गर्म रह सकें. हर दिन पक्षी अपने गीत गाते थे, और भले ही इयूक की तबियत बेहतर नहीं हुई, लेकिन उनकी तबियत और ज़्यादा खराब भी नहीं हुई.

भारी सर्दी अब दूर नहीं थी. दिसंबर में तेजी से बर्फ गिरी. फिर जो पक्षी बचे थे उन्होंने भी वहाँ से पलायन किया. लेकिन "ला-कोलम्बा" वहीं रुक गई, और उसने जेम्मा और उसके पिताजी के लिए लंबे समय तक मधुर गीत गाए.

जल्द ही यह नताल - यानि क्रिसमस आएगा. हर साल जेम्मा और उसके पिता क्रिसमस की सुबह का इंतजार करते थे. उस दिन शहर के बच्चे दावत के लिए उनके घर आते थे, और हरेक बच्चे को चॉकलेट के साथ कोई अन्य छोटा उपहार मिलता था. इस वर्ष ड्यूक बहुत बीमार थे और वो अपने कमरे को छोड़ नहीं सकते थे. "जेम्मा," उन्होंने अपनी बेटी से कहा, "तुम क्रिसमस की सुबह मेरी कुर्सी पर बैठना और बच्चों को नमस्कार करके उन्हें उनके उपहार देना." पिताजी ने जो कहा, जेम्मा ने वैसा ही किया.

"ला-कोलम्बा" और अन्य पक्षी जो अभी भी वहाँ थे, उन्होंने क्रिसमस के लिए एक सुंदर गीत गाया.





क्रिसमस के बाद और अधिक बर्फ गिरी। फिर जनवरी के पहले हफ्ते तक बचे-खुचे पक्षी भी वहां से चले गए। अब सुरीली आवाज़ वाले पीले पक्षी, बांसुरी की आवाज़ वाले नीले पक्षी वहां नहीं रहे। वे और हरे और गुलाबी रंग के पक्षी दक्षिण की ओर उड़ गए। अंत में, जनवरी के मध्य तक, स्पष्ट सुरीली आवाज़ वाले लाल पक्षी भी वहां से निकल गए। केवल "ला-कोलम्बा" अभी भी वहाँ बची।

दोस्तों को पता था कि ड्यूक को पक्षियों से कितना प्यार था इसलिए वे उनसे मिलने और गाने के लिए उनके आंगन में आए। पर ड्यूक मानव गीत नहीं सुनना चाहते थे। लोगों की तेज़ आवाज़ ने उन्हें और थका दिया।



फिर जेम्मा अपने गर्म लबादे के लपेट कर बगीचे में गईं।

"कृपा ला-कोलम्बा," उसने भीख माँगी। "मैं अपने पिता से बहुत प्यार करती हूँ। डॉक्टरों ने मुझे बताया कि तबियत ठीक होने के लिए मेरे पिताजी को वसंत की गर्माहट की जरूरत होगी। तुम्हारा गाना उन्हें उम्मीद दिलाता है। उन्हें लगता है कि वसंत जल्द ही फिर से वापिस आएगा।"

उसके बाद "ला-कोलम्बा"
वहीं रुकी. अब जनवरी का
अंत होने आया था, और वो
साल के सबसे ठंडे दिन थे.
पहाड़ की चोटियों के ठंडी-सर्द
हवाएँ आतीं, जिनसे घर ठंड
से ठिठुर जाते.



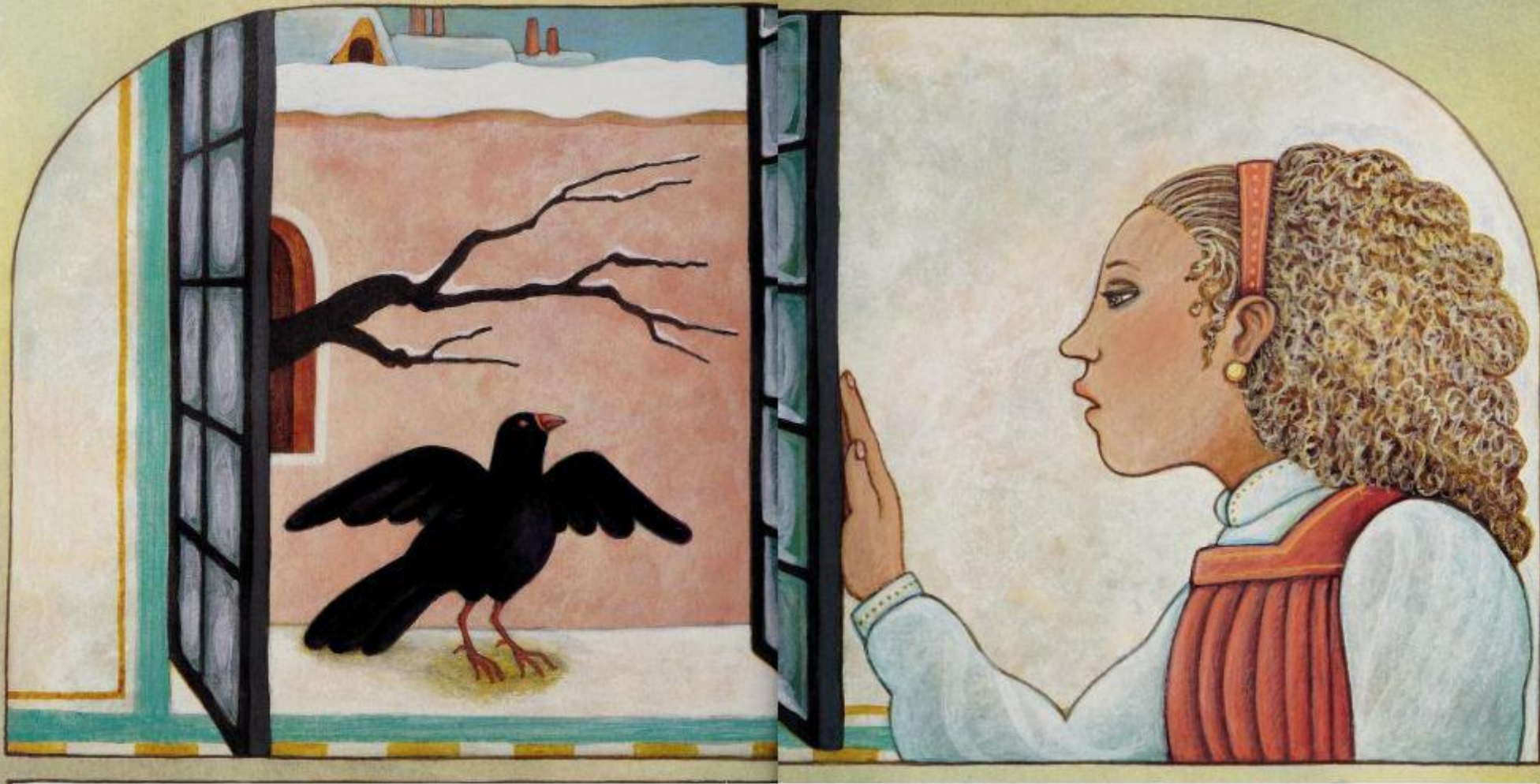
उसके बावजूद हर दोपहर जेम्मा खिड़की को को थोड़ा सा खोलकर अपने पिता के बिस्तर पर बैठती थी. वो पिताजी के कमज़ोर हाथों को सहलाती और उस बीच "ला-कोलम्बा" अपना मधुर गीत गाती.



पर 28 जनवरी को मौसम और भी अधिक खराब हो गया. घर के अंदर लगातार अलाव जलता रहा और चिमनी में धुआँ निकलता रहा. जेम्मा अपने पिता को बड़े हॉल में ले गई. बाहर ऊन की टोकरी भी अब "ला-कोलम्बा" को गर्म नहीं रख सकती थी. जेम्मा ने खिड़की खोली और तब "ला-कोलम्बा" खिड़की की मुंडेर पर आकर बैठ गई. अलाव की गर्म हवा अब उस तक पहुंच सकती थी. उसने गीत गाना शुरू किया और तब तक नहीं रुकी जब तक अंधेरा नहीं छा गया.



फिर वह चिमनी के शीर्ष पर उड़ गई, जहां आग की गर्मी ईंटों तक पहुंचती थी, और उसने उन गर्म ईंटों के नीचे अपना घोंसला बनाया. अगले दो दिनों तक "ला-कोलम्बा" चिमनी में रुकी. वो केवल खाने और ड्यूक के लिए गाना गाने के लिए ही अपने घोंसले से बाहर निकलती थी. ड्यूक दिन-रात गहरी नींद में डूबे रहते थे और जेम्मा उनके पास बैठी रहती थी.



तीसरे दिन, जनवरी के आखिरी दिन, "ला-कोलम्बा" ने चिमनी छोड़ी और गाने के लिए खिड़की तक उड़ान भरी. गीत के पहले सुरों के बाद जेम्मा ने खिड़की को और चौड़ा खोला.

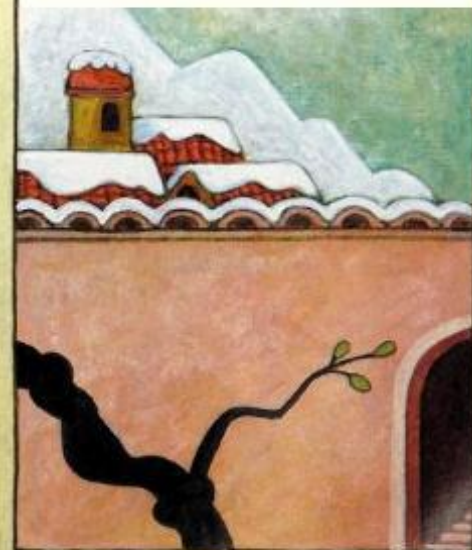
जेम्मा ने जो देखा, उसने उसे चौंका दिया, क्योंकि कालिख ने "ला-कोलम्बा" को एक काले पक्षी में बदल दिया था. "अरे बाप रे!" जेम्मा रोई. "एक ब्लैक-बर्ड (काला-पक्षी)!" लेकिन जब पक्षी के गीत ने कमरे को भरा, तो उसे पता था कि वो "ला-कोलम्बा" ही थी.

इयूक ने अपनी आँखें खोलीं
और तीन दिनों बाद वो पहली
बार उठे. वह कमजोर थे,
लेकिन वो फुसफुसाए,
"मेरा पक्षी."

"ब्लैक-बर्ड," जेम्मा ने कहा.
"आपके गीतों ने मेरे पिता को
बचाया है. मुझे पता है कि अब
उनकी तबियत सुधर रही है."
उसके बाद ब्लैक-बर्ड ने वापस
चिमनी के लिए उड़ान भरी.



अगली सुबह, एक गर्म हवा
का झोंका पहाड़ से आया.
जेम्मा को पता चला कि
वसंत अब आने ही वाली थी.
साल के तीन सबसे ठंडे दिन
अब खत्म हो चुके थे. लेकिन
"ला-कोलम्बा" अब ब्लैकबर्ड
बन गई थी. उसके पंख फिर
कभी सफेद नहीं हुए.





नए साल के पहले गर्म दिन जेम्मा ने पिताजी के साथ आंगन में एक लाल पक्षी को देखा. फिर धीरे-धीरे पीले, नीले, हरे पक्षी भी आने लगे. और जल्द ही उनका बगीचा दुबारा फिर से गीतों से भर गया.



उस वर्ष से "ला-कोलम्बा" और उसके बच्चों को ब्लैकबर्ड के नाम से जाना जाने लगा. उनके सम्मान में, इयूक ने घोषणा की कि जनवरी में आखिरी तीन दिन "ब्लैक-बर्ड" के रूप में जाने जाएंगे. और उत्तरी इटली के पहाड़ों में आज भी ऐसा ही होता है.

